।। अर्हम् ।।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)

दूरभाष : 01565–224600,224900

ई–मेल : jstsdgh01565@gmail.com

पूर्वजन्म अनुभूति शिविर सम्पन्न
अनेक शिविरार्थियों ने देखा अपना पूर्वजन्म

–तुलसीराम चौरड़िया (मीडिया संयोजक)–

श्रीडूँगरगढ़ 9 मार्च : मैं 12 वर्ष का बालक था, पूर्ण नग्नावस्था में जंगल में खड़ा इधर–उधर देख रहा था। मुझे कुछ दूरी पर एक पहाड़ी पर कुटिया नजर आई। उस कुटिया के चारों ओर कंटीली बाड़ थी। केवल एक प्रवेश द्वार था। उसमें प्रकाश नजर आ रहा था। मानों वह मुझे बरबस खींच रहा हो। मैं अंदर गया पर वहां कोई नहीं था। इतने में दो हाथ मेरा गला पकड़ लेते हैं, और मैं तड़पने लग जाता हूं और मेरे प्राण पखेरु उड़ जाते हैं।

ऐसा कहना है आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में लगे प्रेक्षाध्यान से पूर्वजन्म अनुभूति शिविर में भाग लेने वाले जयपुर के लोकेश राठोड़ का। राठोड़ स्वयं रेकी प्रशिक्षक हैं, दूसरों का ईलाज करते है और रिजर्व बैंक में भी अपनी सेवाएं देते है। उनका कहना है कि मैं दूसरों का मार्गदर्शन करता हूं पर मेरा मार्गदर्शन करने वाला कोई नहीं था। मैने प्रेक्षाध्यान शिविरों में अनेक बार भाग लिया। तब आभास हुआ कि प्रेक्षाध्यान अपने आप को जानने की शक्तिशाली पद्धति है। इस शिविर में आकर मैनें अपने अतीत को जाना है। जिससे भविष्य को ओर अधिक सुन्दर बनाने की प्रेरणा मिली है। ऐसी एक ही कहानी नहीं है, अनेक युवाओं की जुबानी आप पूर्वजन्म की अनुभूति सुन सकते हैं। जब आज युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में पूर्वजन्म अनुभूति शिविर के समापन सत्र में शिविरार्थियों के अनुभवों से परिचित हुए तो वहां बड़ी तादाद में बैठे श्रद्धालुओं के मन में भी अपना पूर्व जन्म देखने की जिज्ञासा पैदा हो गई। उनमें कोई पीछले जन्म में नागा बाबा था तो कोई सर्प 1 कोई पंडित था तो कोई सामान्य आदमी। इस अनुभूति से सब आश्चर्यचकित थे।

उपरले तेरापंथ भवन में समापन सत्र को संबोधित करते हुए युवाचार्य महाश्रमण ने पूर्वजन्म और पुनर्जन्म सिद्धांत को शास्त्र मान्य बताते हुए कहा कि कर्म से आबद्ध आत्मा नया जन्म ग्रहण करती है। कर्मों का फल इसी जन्म या अगले जन्मों में भोगना ही होता है। उन्होने शिविरार्थियों को शिविर में किये ध्यान के अभ्यास को आगे बढ़ाते रहने की प्रेरणा दी।

युवाचार्य महाश्रमण ने गीता में बताये गये दान के प्रकारों में सात्विक दान पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जो पास में धन, पदार्थ होते हुए भी दान नहीं कर पाता है वह दरिद्र होता है। जो धन दूसरों का उद्धार नहीं कर सकता केवल अहंकार को बढ़ावा देने बन जाता है वह धरती पर भारभूत हो जाता है। उन्होने आचार्य तुलसी द्वारा प्रदत विसर्जन सूत्र की चर्चा करते हुए कहा कि दान अनाशक्ति से देना चाहिए और सुपात्र को देना चाहिए। जो हिंसा आदि को बढ़ावा देने के लिए दान करता है वह कुपात्र को दान देना होता है। उन्होने कहा कि ज्यादा संग्रह करना एक प्रकार से पाप है।

पूर्वजन्म अनुभूति शिविर के निर्देशक मुनि किशनलाल ने कहा कि पूर्वजन्म कौतुहल्ल नहीं, एक सच्चाई है। युरोप के लोग इस पर गहराई से शोध कर रहे हैं। इस शिविर में मुनि हिमांशु कुमार ने अनुप्रेक्षा के प्रयोग और मुनि नीरज कुमार ने कायोत्सर्ग का अभ्यास करवाया। प्रेक्षा प्रशिक्षक गिरजाशंकर दुबे ने अपने विचार रखे, मुनि नीरज कुमार ने मंगल गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

तुलसीराम चौरड़िया
मीडिया संयोजक /सहसंयोजक